P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# तिनके की मद्द से आग जलाते – लीलाधर जगूड़ी

**वाई.सी.यादव**
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
डी0 ए0 वी0 पी0जी0 कालेज,
बुलन्दशहर

**सारांश**

पद्यम व साहित्य अकादमी से पुरस्कृत लीलाधर जगूडी के काव्य की प्रमुख विशेषता सूक्तियों का हेाना व पूंजीवादी सभ्यता और उपभोक्तावादी समकालीन कविता, गद्यात्मक प्रयोग धार्मिता जो कि इनकी मौलिकता है, के विषय में यहां विश्लेषण किया गया है।

**मुख्य शब्द :** लीलाधर जगूड़ी मानवीय संवेदना कर्म की समरूपता, पूंजीवादी सभ्यता, उपभोगवादी संस्कृति, बोझिल नारी शिवत्व, अभिव्यक्ति कौशल, अकर्मव्यता, वृद्धावस्था, किसान आन्दोलन, खाँटी गद्यात्मकता, प्रयोग धार्मिता, क्रान्तिकारी।

**प्रस्तावना**

अस्सी के बाद के रचनाकारों में प्रमुख हस्ताक्षर लीलाधर जगूड़ी ऐसे कवि हैं जो आधुनिक मूल्यहीन समाज में मनुष्यता पर आए संकटों से जूझते दिखाई देते हैं। 'नई कविता' के पश्चात् 'वादों के दलदल में अटकी कविता की गाड़ी को युवा (नवम् दशक) और युवतम (अंतिम दशक) की और से जाने वाले जगूड़ी की कविताएं मानवीय संवेदनाओं की गर्माहट का कम्बल ओढ़े हुए हैं। परिवेश की सच्चाई पर उनकी पैनी नजर है। वे 'पेड़ों के बाहर–भीतर की सरसराती लय' पर गुनगुनाने वाले कवि हैं। उनकी कविता विचार और कर्म की समरूपता की कविता है जहां साहस अपेक्षित है। दहशत के मध्य 'जिन्दगी एक भिड़ंत है'। कवि स्पष्ट करता है कि साहस के प्रसव के लिए भय की पीड़ा आवश्यक है –

हो सकता है आप भी एक डरी हुई आत्मा है।
मेरी तरह सशरीर साहस की तलाश में हो
क्योंकि जो हैं वे भय के कारण ही साहसी हैं।

अतः हम भय का सामना साहस से करें और तटस्थता से परहेज करें क्योंकि –

डरा मैं और मेरा पड़ोसी
मेरी वजह से उजड़ा का एक घर
मेरी वजह से कमजोर बने हैं कुछ लोग
ठीक जैसे कुछ लोग शक्तिशाली

वह मरने से डरना भी नहीं सिखाते, क्योंकि

कौन कैसे मरेगा यह मौत पर छोड़ देना चाहिए।
देखना चाहिए कौन कैसे जीता है।
जीना बड़ी चीज है।

समाज से सरोकार उनकी पैनी दृष्टि से छूटे नहीं है। वे पूंजीवादी सभ्यता और उपभोक्तावादी संस्कृति पर व्यंग्य की पैनी छुरी भी चलाते हैं। 'जंगल में जंगल से, जानवरों में जानवरपन से, आदमियों में दोनों से डरा मैं, स्पष्ट करता है कि आदमी में जंगल भी है और जानवरपन भी।

आज के समाज में बच्चे के बस्ते के वजन से भी कवि चिन्तित हैं। बोझिल बस्ता पढ़ाई को भी बोझिल बना देता है, वह कोमल है, बस्ता उसे झुका डालेगा इसलिए –'पेड़ नहीं जानता बस्ते का वजन/पेड़ जानता है बढ़ते हुए बच्चे का वजन/कच्चे फलों पर पड़ने वाले ढेले के वेग से'। बच्चों की विडम्बना है कि उनके कंधों पर आशाओं का बोझा लदा हो किन्तु न हम समय दे रहे हैं और न संस्कार। हमारा घर हिल रहा है शब्दों के विकृत हो जाने से। अतः हमें बच्चों को 'सही' शब्द देने होंगे। बच्चों पर ही नहीं युवाओं और बूढ़ों को भी क्लिक करता चला है उनका अभिव्यक्ति कौशल/उनके अनुसार युवाओं के पास धैर्य नहीं होता वृद्धों के पास साहस नहीं होता –

युवा गलती करते हैं बूढ़े सिर्फ सुधार चाहते हैं।
बूढ़े गलती का साहस खो बैठते है युवा खो बैठते हैं धीरज।।

समकालीन कविता में नारी पर काव्य रचना करने वालों भी जगूड़ी प्रमुख है। सत्य और सौन्दर्य के बीच का शिवत्व उनकी कविता में विद्यमान है।

अकर्मन्यता को कवि ने सौन्दर्य का प्रतीक नहीं माना है, जगूड़ी श्रमशीलता के कवि हैं। वृद्धावस्था तक पहुँची स्त्री को उन्होंने 'आँधी में आहत वृक्ष के विलाप' की तरह माना है। स्टेशन पर दातुन बेंचने वाली टुनकी बाई जब रोटी खाने बैठती है तो कुतिया अपनी आँखे टुनकी पर टॉके थी, उनका व्यंग्य कुतिया के माध्यम से शब्दों में सरक आता है–

इस देश को हो या न हो
इस कुतिया को टुनकी से एक टुकड़ा रोटी की उम्मीद है।

गरीब वेश्या की मौत पर कवि की संवेदना मुखर हो उठती है–

मेहनत की मौत की तरह
एक स्त्री मरी पड़ी थी।

पूँजीवादी बाजार की बात करते हुए एक ओर वे अमरीका की आलोचना करते हैं तो दूसरी ओर देशी किसान आंदोलन की। यह सच है कि पूँजी की दुनिया में पूँजी सबको खरीद सकती हैं फिर भी चट्टानों को फोड़कर निकलता है न्याय 'यथा सम्भव न्याय आया यथा शक्ति अन्याय से टकराकर'। 'स्वस्थ समाज की संरचना हो सके,

इसके लिए जगूड़ी 21वीं सदी का 'विज्ञापन' जारी हो सके,

मुझे ऐसे बच्चे चाहिए जो सीधे आदमी हो जाएँ
जिनके बड़े होने और खड़े होने का इन्तजार न करना पड़े
जो एकदम तैयार रहते हों और छुट्टी न लेते हो
जो सोचे नहीं, सिर्फ करें
बस बीमार न पड़ते हों
जो सिर्फ जिएँ और मरें।

जगूड़ी के काव्य की एक प्रमुख विशेषता है उनमें सूक्तियों का होना – खाँटी गद्यात्मकता लिए हुए, हरिशंकर परसाई की भाँति चुभती हुई। काव्य में गद्यात्मक प्रयोगधार्मिता कवि की मौलिकता है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य है –

– लाश और की हो और पूरी हो सबको अचरज था।
– दिन नहीं व्यक्ति उदास है, व्यक्ति बीतता है।
– पर यदि हटा दिए जाएँ पहाड़ तो हिन्दुस्तान के सिर पर अल्मोनिय एक पतीला रखेंगे ?

और भी

– अमेरिका के बच्चे चड्डियों में।
– पिस्तौलें लटकाए घूम रहे हैं पर मैं चीख न सका
– बच्चे आए खिलौनो के पास जैसे
– माँ–बाप आते हैं बच्चों के पास
– विद्वान अण्डे कम देते हैं और बीट ज्यादा करते हैं।

कवि समाज के साथ–साथ व्यक्ति को भी महत्वपूर्ण मानता है। बच्चे, युवा, बूढ़े, स्त्री, माँ सब उनकी अभिव्यक्ति के दायरे में हैं। गद्यात्मक और भावात्मक सूक्तियों को प्रस्तुत करने की जैसे प्रयोगधर्मिता जगूड़ी ने दिखलाई वह क्रान्तिकारी है। कवि में यथार्थ पर चलने की शक्ति है तो सयम की मार से टकराने की सामर्थ्य भी। भय की शक्ति को पहचानना कवि का ही साहस है।

**उद्देश्य**

कवि द्वारा अपने जीवन के विभिन्न पक्षों में गुजरते हुए समकालीन अनुभवों का काव्यात्मक वर्णन का अध्ययन करना।

**निष्कर्ष**

भाषाएं भी अलग–अलग टौनकी वाले पेड़ों की तरह सबका अपना–अपना हरापन है। कुछ उन्हें काट कर उनकी छवियों का एक जगह बुरादा बना देते हैं।

कवि का यह कथन यह संकेत करता है कि भाषा की नवीनता मात्र कविता नहीं होती है। न ही संवेदना के नये पन से कविता कोई रूपाकार नहीं लेती है वह तभी चित्रित हो पाता है। जब तक पाठक को नयी कविता के जन्म का अहसास हो। कवि अपनी प्रत्येक कविता में जीवन के अनुभवों का नवीन चित्रण करते हैं। कवि की भाषा की बुनावट इकहरे नहीं है वे कभी भावुक कवि की तरह पेश नहीं आते अपितु सत्त नवीन जटिल अनुभवों के साथ चलते हैं।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. इण्डिया टुडे, साहित्य वार्षिकी 2000
2. सम्मेलन पत्रिका (शोध त्रैमासिक) भाग 90 संख्या 4
3. अज्ञेय से अरूण कमल (भाग–2) डॉ0 सन्तोष कुमार तिवारी
4. कविता का तिर्यक लीलाधर मंडलोई